Unveiling the Boundaries of Gender Issues

Dr. Zeenat N. Kashmiri
Dr. Sujata A. Mankar
Dr. Leena B. Chandnani

MKSES PUBLICATIONS
LUCKNOW, INDIA

Unveiling the Boundaries of Gender Issues

Editors

Dr. Zeenat N. Kashmiri

Dr. Sujata A. Mankar

Dr. Leena B. Chandnani

*****

MKSES PUBLICATIONS

Kanpur Road, Lucknow

MKSES Publisher (India)

Publisher Address: Head Office: 1st Floor, Building No-85A, (Nanak Arcade near Sani Mandir, Parag road, LDA colony, Kanpur Road, Lucknow-226012.

Mobile No: +91 9838298016, +91 8299547952 Office Land line No: +91 5223587193

E-mail: mkespublication@gmail.com

Website: www.mksespublications.com

Copyright© MKSES Publisher Lucknow India

First Published: **May2021**

ISBN: 978-93-91248-06-2

Page No.1-183

Disclaimer: The responsibility for opinions expressed in articles, studies and other contributions in this publication rests solely with their authors, and this publication does not constitute an endorsement by the Editorial Team of the opinions so expressed in them.

© All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form or by any means without the prior written permission of the publishers.

Contents

S. No.	Title of the Chapter	Author/s	Page No.
1	Choose To Challenge	Dr. Urmila Dabir	1-7
2	Women Empowerment	Dr. Mina Malkhandi	8-14
3	The New and Old Face of Indian Women Empowerment	Dr. Sunita Gupta	15-23
4	Gender Inequality as Depicted in Deepa Mehta's Film 'Water'	Dr. Suman Kaswani	24-29
5	Challenges and Status of Women Empowerment from Vedic to Modern Era in India	Dr. Himani C. Pandhurnekar, Dr. Doyel M. Bhattacharya and Ms. Babita G. Yadao	30-36
6	A Study of Gender Stereotyping of Rural Indian Women through the Adherence to *Ghunghat* Tradition	Dr. Meenakshi V. Wasnik	37-44
7	Women In Non-Traditional Roles	Dr. Reema K. Kamlani	45-54
8	Gender Stereotypes: A Threat To Women Empowerment	Ms. Babita G. Yadao, Dr. Himani C. Pandhurnekar and Dr. Doyel M. Bhattacharya	55-64
9	Women Empowerment From Vedic To Modern Era	Dr Anita Chandak , Ms.Mayuri Chandak and Dr Sujata Mankar	65-70
10	A Reflection of Gender Based Disparity in the Real World of Cinema and Literature	Dr. Doyel M. Bhattacharya, Ms. Babita G. Yadao and Dr. Himani C. Pandhurnekar	71-76
11	Women Pursuing Non-Traditional Career Opportunities In India	Dr. Aarti N. Wazalwar	77-81

12	The Role of Women for Sustainable Agriculture In India	Dr. Sayeda Parveen Qureshi	82-85
13	Women in Green Revolution	Dr. Mamta Manwatkar and Dr. Sujata A. Mankar	86-92
14	Green Revolution: Impact on Women Then and Now	Dr. Jayshree S. Thaware	93-101
15	Glass Ceiling in Banking Sector for Women – A Study of Gender Biasness	Dr. Janvi Ghumnnai and Dr. Anand Thadani	102-110
16	Women Empowerment Redefined: From Sinauli to Present	Dr. Sharda Bhagchandani	111-116
17	Women in Non-Traditional Roles	Ms. Anshu Choudhary	117-121
18	Empower Women and Achieve Gender Equality	Dr. Damini R. Motwani	122-125
19	Gender Sensitization	Adv. Manjusha Londhe and Dr. Ragini Marganwar	126-130
20	Gender Sensitization and Psychology	Ms. Trupta D. Wakde	131-138
21	Women's Stance from Vedic to Modern Era	Ms. Jasmeen Kaur Lamba	139-144
22	Gender Stereotype	Mrs. Rita Pawade	145-149
23	Sustainable Green Practices by Women	Dr. Milind Shinkhede	150-152
24	स्त्री विमर्श –प्राचीन युग से आधुनिक काल तक	Dr. Neha Kalyani	153-163
25	भारतीय समाज में नारी: दशा और दिशा	Dr. Sapna Tiwari	164-176
26	हिंदी कहानियों मे नारी चित्रण	Dr. Rashmi Jagyasi	177-183

suppressed are the actual ideologies of patriarchy. This is the main culprit in hampering women emancipation.

According to United Nations, one out of every three women, experiences domestic violence at some point of time in her life. There is gender imbalance and inequality. Women being physically less strong than men are frequently labeled as "good for nothing". They are made to feel inefficient and insufficient in many areas of work. In the educational field, they get minimum financial and emotional support. If a handful of women dare to break the barriers and feel the need for education, they are made to feel that it would be unworthy. The ultimate aim of their lives is marriage and raising a family. So, they lack behind men in the parameters of education and development.

Another important factor which is mostly neglected by the society is women's health. Whether rural or urban, women never have the time, energy or money to take care of the same. It is imbibed in them since their adolescence, that their husband's health is of utmost importance and they need to give priority to it. And they do so, sometimes even at the cost of their own health. In rural areas, women do not even have the basic health facility as a toilet in their homes. It is the need of the hour, to take measures for women's wellness. There should be health and nutritional counseling to bring awareness amongst them.

Let's talk about single women in the society. Whether unmarried, divorcee or a widow, they are always given a disrespectful look. A widow living a well groomed happylifeis still a taboo in our society. It is heart wrenching that child marriage is still prevalent in India. It is estimated that nearly 1.5 million girls under the age of 18 are married every year. Even after marriage they have to experiencephysical and emotional abuse. Some girls have to face malnutrition also. Young adolescent girls from rural and urban areas are frequently trafficked for physical exploitation and forced labor. If all this was not enough, they also have to bear with demons like eve teasing, sexual abuse and rape. Due to all these reasons, they end up suffering with mental disorders and sometimes STD's too.

The hard reality of current times also shows that it is a woman that is another women's foe. To make our way in the society, all we need to do is go hand in hand with each other, rather than being jealous of each other. These are not problemsof just a particular sector, but are seen globally. It's high time we realize that it is a basic human right to live a dignified life. We need to be more vocal about our thoughts and needs. It is the responsibility of each and every

ISBN: 978-93-91248-06-2

अध्याय-24

स्त्रीविमर्श –प्राचीन युग से आधुनिक काल तक

डॉ नेहा कल्याणी

गो.से.अर्थ-वाणिज्य महाविद्यालय, नागपुर

Email: neha.gscollege@gmail.com

सारांश:- इस वर्ष हम आजादी की 75वीं साल गिरह को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे है, किन्तु फिर भी स्त्री की स्थिति में कुछ ज्यादा फर्क नहीं आया है। यद्यपि 1947 से 2021 के इस लम्बे समय में कुछ हद तक स्त्रियाँ जागरूक हुई है। शिक्षा से स्त्रियों का विविध क्षेत्रों में विकास हुआ है, किन्तु यह विकास केवल गुणात्मक था। गणनात्मक विकास में आज भी हमारा देश बहुत पीछे है। पिछली कुछ शताब्दियों में औरतें पंचायतों की मुखिया और सरंपच के पदों पर प्रतिष्ठित तो हुई है किन्तु मात्र कठपुतली की तरह क्योंकि निर्णय लेने वाला तो आज भी पुरूष समाज ही है। स्त्री सशक्तिकरण की अनेक योजनायें बनती है किन्तु वे योजनायें केवल सरकारी दस्तावेजों तक ही सीमित रहती है।

प्रागैतिहासिक काल में जब मातृमूलक सत्ता थी तो स्त्री स्वावलम्बी एवं निर्णय लेने में सक्षम थी। दुर्गासप्तशती की देवी भी इसी काल की प्रतीत होती है, जिसे धनरूपा, अन्नरूपा, ऊर्जारूपा कहा गया है। ऐसे प्रमाण आज भी विश्व की अनेक जनजातियों-शिलांग, मिजोरम, कुर्ग, केरल आदि के समाज में मिलते है। पितृप्रधान सत्ता के स्थापित होने के बाद स्त्री को सम्पति माना गया और कालान्तर में उसका सहचरी, सहभागिनी, सबला का रूपअनुचरी, अनुगामिनी, और अबला में परिवर्तित हो गया। आम्रपाली जैसी रूपवती स्त्रियाँ अभिजात्यों की चक्षु भोग्या तो हो सकती है किन्तु किसी के घर की शोभा नहीं बन सकती।

दुर्गासप्तशती के स्तुतिगान से हमं गौरवान्वित और चमत्कृत होते है, किन्तु नारी मुक्ति की चेतना का उदय नहीं होता। सुभद्राकुमारी चैहान की 'खूब लडी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी' कविता पाठक को

ISBN: 978-93-91248-06-2

प्रेरित करती है, मन में देश प्रेम भी जगाती है लेकिन नारी मुक्ति की सूचक नही है। क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई को मर्दानी कहकर प्रतीत होता है कि सुभद्रा जी उनके नार्योचित गुणों को छोटाकर रही है। क्या बहादुरी का गुण केवल मर्दों में ही होता है? यह विचारणीय है।

सत्य यही है कि नारी मुक्ति आधुनिक युग की देन है, प्राचीन युगीन धर्मशास्त्रों की नहीं। उदाहरणतः याज्ञवल्क्य गार्गी संवाद में जब गार्गी ब्रह्या के बारे में सन्देह करती है और याज्ञवल्क्य उनके प्रश्नों का उत्तर नहीं दे पाते तो वे कहते हैं कि ''प्रश्न मत करो! यदि और प्रश्न किया तो तेरा सरफट जायेगा। अर्थात तर्क मत करो। स्त्री को तो सवाल करने का भी अधिकार भी नहीं। दुर्गा सप्तशती में स्त्री को असुर मर्दिनी, अन्नरूपेण, स्त्री रूपेण मानने वाला भारतीय समाज स्त्री की अस्मिता को तार-तार करने वाले पुरूष के बिना स्त्री का जीवन निरर्थक मानता है। पराश्रिता स्त्री धीरे –धीरे स्वयं को ही नव अबला मानने लगी, उसे अपने आत्मसम्मान का एहसास ही नहीं था। इस हीनता में वह स्वयं को गौरवान्वित मानती रही। समर्पण, पूर्ण समर्पण ही उसके जीवन का ध्येय बनता चला। वर्तमान समय में स्त्रियाँ अपनी आकांक्षाओं-स्वप्नों और संघर्षों की अक्कासी के लिए अपने प्रयत्नों को रंग देने का प्रयास करते हुए पितृसत्ता की कुत्सित मानसिकता के घेरे से स्वयं को मुक्त करते हुए अब स्त्री की पहचान और स्त्री दृष्टि अस्तित्व में आ गई है। भले ही आज स्त्री ने अपना नाम विश्व के हर कोने में लिख दिया हो, पर मुक्ति अभी बाकी है। क्योंकि केवल पहचान बनाने से मुक्ति नहीं मिलती, मुक्त हो ना पडता है। उसके लिए स्वयं से लडना पडता है- उस पर काबू पाना होता है। नारी को पुरूष से नहीं बल्कि पुरूष मानसिकता से मुक्ति चाहिये। जब तक ऐसा नहीं होगा, उसकी अस्मिता बेमानी होगी। वर्तमान युग तक केवल ऑशिक स्त्रियों ने ही स्त्री अस्मिता का निर्माण किया है जब सम्पूर्ण स्त्री समाज इस से दीप्त होगा, तभी सही अर्थों में सशक्तिकरण होगा।

कुंजीशब्दः स्त्री, शब्द, अस्मिता, मानसिकताआदि।

ISBN: 978-93-91248-06-2

इस वर्ष हम आजादी की 75 वीं सालगिरह को अमृत महोत्सव के रूप में मना रहे है, किन्तु फिर भी स्त्री की स्थिति में कुछ ज्यादा फर्क नहीं आया है। यद्यपि 1947 से 2021 के इस लम्बे समय में कुछ हद तक स्त्रियाँ जागरूक हुई है। शिक्षा से स्त्रियों का विविध क्षेत्रों में विकास हुआ है, किन्तु यह विकास केवल गुणात्मक था। गणनात्मक विकास में आज भी हमारा देश बहुत पीछे है। पिछली कुछ शताब्दियों में औरतें पंचायतों की मुखिया और सरंपच के पदों पर प्रतिष्ठित तो हुई है किन्तु मात्र कठपुतली की तरह क्योंकि निर्णय लेने वाला तो आज भी पुरूष समाज ही है। स्त्री सशक्तिकरण की अनेक योजनायें बनती है किन्तु वे योजनायें केवल सरकारी दस्तावेजों तक ही सीमित रहती है।

भारतीय संस्कृति वैशिष्टयवाद की संस्कृति रही है। वैदिक साहित्य में कहा गया है कि -

"यत्र नारी पूजयन्ते तत्र रमन्ते देवता।"

हमारे भारत देश में नारी को देवी मानकर मन्दिर में मूर्ति की तरह स्थापित कर पूजा तो जा सकता है किन्तु उसे पुरूष के समकक्ष मानकर समाज में समत्व स्थान नहीं दिया जा सकता। इस बात का प्रमाण हमें प्राचीन कालीन साहित्य से मिलता है।

नारी को पूर्णतःअविश्वसनीय बताते हुए मनु कहते हैं कि-

"एकोलुब्धस्तु साक्षीस्यादबहयःशुच्यापि।

स्त्री बुद्धेरास्थिरत्वातुदोषेश्चान्येपियेवृत्ता।।"

अर्थात एक भी निर्लोभी पुरूष साक्षी हो सकता है, परन्तु बहुत स्त्रियाँ पवित्र होने पर भी बुद्धि की चपलता के कारण साक्षी नहीं हो सकती। ये गवाह बनने के भी काबिल नहीं है।

जैमिनीय ब्राह्यण में नारी जाति को दुख का कारण माना गया है। वेदान्त के पारगंत विद्वान नारी को नर्क का मूल मानते है। शंकराचार्य ने नर्क का एकमात्र द्वार नारी को ही बताया है। कौटिल्य ने लिखा है

ISBN: 978-93-91248-06-2

कि -''स्त्री के चरित्र और पुरुष के भाग्य को देवता भी नहीं जान सकते, फिर मनुष्य कैसे जान सकता है? उन्होंने स्त्री को अकेले घुमने की इजाजत भी नहीं दी है। चाणक्य नीति में कहा गया है कि – स्त्री दान पुण्य करके, तीर्थ यात्रा एवं व्रत उपवास कर के भी तब तक पवित्र नहीं होती जब तक वह पति के चरणों को धोकर ना पी ले।

प्रागैतिहासिक काल में जब मातृ मूलक सत्ता थी तो स्त्री स्वावलम्बी एवं निर्णय लेने में सक्षम थी। दुर्गा सप्तशती की देवी भी इसी काल की प्रतीत होती है, जिसे धनरूपा, अन्नरूपा, ऊर्जारूपा कहा गया है। ऐसे प्रमाण आज भी विश्व की अनेक जनजातियों - शिलांग, मिजोरम, कुर्ग, केरल आदि के समाज में मिलते है। पितृ प्रधान सत्ता के स्थापित होने के बाद स्त्री को सम्पति माना गया और कालान्तर में उस का सहचरी, सहभागिनी, सबला का रूप अनुचरी , अनुगामिनी, और अबला में परिवर्तित हो गया। आम्रपाली जैसी रूपवती स्त्रियाँ अभिजात्यों की चक्षु भोग्या तो हो सकती है किन्तु किसी के घर की शोभा नहीं बन सकती।

विवाह से पूर्व स्त्री पिता के , विवाह के बाद पति के और पति की मृत्यु के बाद पुत्र या ससुराल के अन्य किसी पुरूष के अधीन होती थी। उसे निर्णय लेने का कोई अधिकार नहीं था। आज उसमें यह बोध जाग उठा है कि वह स्वयं भी पुरूष के समकक्ष एक इकाई है। तत्पश्चात सामन्तवाद, जातिवाद और पंचायत समाज ने अपने पावं पसारे, जिसकी विकृत रूढियों के कारण स्त्री मात्र कठपुतली थी जिसे अपनी जिन्दगी भी अपने हिसाब से जीने का हक नहीं था। औद्योगिक युग आने पर सामन्ती शिकंजे ढीले हुए और मानव मात्र की आजादी के लिए जन उठ खडा हुआ। बराबरी, भाईचारा, आजादी का नारा लगा तो गुलामों ने, शोषित वर्गों ने, प्रजा ने, समाज में हेय समझी जाने वाली काली-पीली नस्लों ने जिनमें लिंग भेद की शिकार और तभी शामिल थी, अपने हक की आवाज बुलन्द की। उसी काल में नारी मुक्ति का भी सवाल उठा। इस लडाई में पुरूषों ने तो अपना हक हासिल कर लिया, किन्तु दोहरी-तिहरी गुलामी में जकडी नारी उसी तरह जकडी रही और आज भी अपनी मुक्ति के लिए छटपटा रही है। नारी अपने कर्तव्य, अपनी जिम्मेदारियों, अपने स्नेह, अपने वात्सत्य से मुक्ति नहीं चाहती, वह तो प्यार भरा आश्रय चाहती है, वो मुक्ति चाहती उन एहसान जताने वाली नजरों से, वो मुक्ति चाहती है उसकी देह को लोलुप दृष्टि से

ISBN: 978-93-91248-06-2

देखने वाली उन वीभत्स निगाहों से, वो मुक्ति चाहती है उसे नीचा और कमतर समझने वाले नजरों के तीरों से। नारी की ये लडाई किसी बाहरी वर्ग या समाज के विरूद्ध नहीं है- बल्कि अपने भीतर- अपने समाज व परिवार के विरूद्ध है, खुद अपनी मानसिकता से है।

झारखंड के आदिवासी समाज में डायन प्रथा या हल जोतने पर औरत को बैल की जगह जोतने और छप्पर छाने पर सरे आम बेइज्जत करने या सम्पति में उसे हिस्सेदार न मानने की विकृत परम्परायें आज भी व्याप्त है पर इन सबके बावजूद वहां की स्त्रियां पुरूष के समानान्तर श्रम करने के कारण अधिक स्वतंत्र है, वे अकेली जंगलों में कही भी जा सकती है। समाज में उनकी अलग ही अस्मिता है। शिलांग में मातृ प्रधान समाज है। वहां अपराध तो होते है किन्तु छेडखानी या बलात्कार जैसी घटनायें नहीं होती। जबकि भारत में शुचिता भंग होने पर वे खुद को अपराधी मानने लगे हैं और समाज भी उन्हें तिरस्कृत करता है। स्वावलम्बन और अस्मिता बोध उन्हें इस ग्रन्थि से मुक्ति दिला सकता है। यदि सरकार बलात्कार की शिकार लडकियों को तत्काल रोजगार देकर उन्हें आर्थिक सुरक्षा प्रदान कर दे तो वे समाज में भी प्रतिष्ठित हो सकेंगी और मानसिक तौर पर भी वे सुरक्षित महसूस करेंगी।

भारत में आज बराबरी का अधिकार मिलने के बावजूद कुछ अपवाद छोडकर अधिकांश औरतें वोट का इस्तेमाल तक भी पति, पुत्र, पिता या भाई की मर्जी से करती है। आज तक भारत में औरतों को राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक समानता नहीं मिल पाई है। विकृत सामाजिक रूढियों के कारण भारतीय स्त्रियां शोषण का शिकार होती रहती है। आज भी पितृ प्रधान समाज में स्त्रियों की नेतृत्वकारी भूमिका को अच्छा नहीं समझा जाता। यदि कोई स्त्री समस्त प्रतिरोधात्मक स्थितियों का सामना करते हुए कामयाब हो जाती है तो उसके द्वारा अर्जित शक्ति के कारण समाज उसकी पूजा करने लगता है।

दुर्गा सप्तशती के स्तुतिगान से हम गौरवान्वित और चमत्कृत होते है, किन्तु नारी मुक्ति की चेतना का उदय नहीं होता। सुभद्रा कुमारी चैहान की 'खूब लडी मर्दानी वो तो झांसी वाली रानी थी' कविता पाठक को प्रेरित करती है, मन में देश प्रेम भी जगाती है लेकिन नारी मुक्ति की सूचक नही है। क्योंकि रानी

ISBN: 978-93-91248-06-2

वर्तमान समय में स्त्रियाँ अपनी आकांक्षाओं-स्वप्नों और संघर्षों की अक्कासी के लिए अपने प्रयत्नों को रंग देने का प्रयास करते हुए पितृसत्ता की कुत्सित मानसिकता के घेरे से स्वयं को मुक्त करते हुए अब स्त्री की पहचान और स्त्री दृष्टि अस्तित्व में आ गई है। भले ही आज स्त्री ने अपना नाम विश्व के हर कोने में लिख दिया हो, पर मुक्ति अभी बाकी है। क्योंकि केवल पहचान बनाने से मुक्ति नहीं मिलती, मुक्त होना पडता है। उसके लिए स्वयं से लडना पडता है- उस पर काबू पाना होता है। नारी को पुरूष से नहीं बल्कि पुरूष मानसिकता से मुक्ति चाहिये। जब तक ऐसा नहीं होगा, उसकी अस्मिता बेमानी होगी। वर्तमान युग तक केवल आंशिक स्त्रियों ने ही स्त्री अस्मिता का निर्माण किया है जब सम्पूर्ण स्त्री समाज इस से दीप्त होगा, तभी सही अर्थो में सशक्तिकरण होगा।

सन्दर्भग्रन्थ:-

1. भारतीय नारी के उद्धारक डॉ बी. आर.अम्बेडकर –डॉ कुसुम मेघवाल
2. स्त्री विमर्श: कलम और कुदाल के बहाने – रमणिका गुप्ता- शिल्पायन प्रकाशन, नई दिल्ली
3. स्त्री संघर्ष का इतिहास – राधा कुमार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य, सम्पादक – राजेन्द्र यादव, अर्चना वर्मा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. स्त्री मुक्ति का सपना – अरविन्द जैन, कमला प्रसाद- वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
6. भविष्य का स्त्री विमर्श – ममता कालिया – वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली